KAR_10_AUG_2022.qxd 10-08-2022 16:00 Page 1

साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 7, अंक : 51 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 10 अगस्त 2022 से 16 अगस्त 2022 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

पर्यावरण के संरक्षण के लिए ईएमआरएस के विद्यार्थी अपने स्कूलों, गांवों में पेड़ लगाएं और दूसरों को भी वृक्षारोपण अभियान चलाने के लिए प्रेरित करें : श्री अर्जुन मुंडा

नई दिल्ली। जनजातीय कार्य मंत्रालय ने विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर आज केंद्रीय मंत्री श्री अर्जुन मुंडा और जनजातीय कार्य एवं जल शक्ति राज्य मंत्री श्री विश्वेश्वर टुडु के साथ एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की आभासी बातचीत का आयोजन किया। आज के संवाद सत्र में 378 ईएमआरएस आभासी रूप से सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर, जनजातीय कार्य मंत्रालय में सचिव श्री अनिल कुमार झा और ईएमआरएस, नेस्ट के अधिकारी मौजूद थे। कार्यक्रम का आरंभ कुजरा, झारखंड के ईएमआरएस विद्यार्थियों द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति के साथ हुआ। श्री अर्जुन मुंडा के साथ बातचीत करते हुए ईएमआरएस के विद्यार्थियों ने श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को स्वतंत्रता के बाद से हमारे देश की प्रथम जनजातीय राष्ट्रपति नियुक्त किए जाने पर प्रसन्ता व्यक्त की। विद्यार्थियों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए केंद्रीय मंत्री श्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि सरकार ने जनजातीय आबादी की शिक्षा की चुनौती को मिशन मोड में लिया है और जनजातीय कार्य मंत्रालय उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने की दिशा में काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि ये स्कूल जनजातीय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करेंगे। उन्होंने यह भी बताया कि जनजातीय विद्यार्थियों के लिए विदेश में शिक्षा सहित उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्तियां उपलब्ध हैं और जनजातीय कार्य मंत्रालय इसके लिए विद्यार्थियों को 100 प्रतिशत छात्रवृत्ति प्रदान करता है। श्री अर्जुन मुंडा ने अपने संबोधन में कहा कि आज हम विश्व आदिवासी दिवस मना रहे हैं, ऐसे में यह गौरव का क्षण है कि एक जनजातीय महिला श्रीमती द्रौपदी मुर्मू भारत की राष्ट्रपति निर्वाचित हुई हैं और उनकी यात्रा भारत के सभी जनजातीय लोगों के लिए प्रेरणादायक है। इस विशेष दिन के अवसर पर उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति के रूप में उनका निर्वाचन भारतीय लोकतंत्र की ताकत को दर्शाता है। श्री अर्जुन मुंडा ने सभी ईएमआरएस विद्यार्थियों से अपील की कि वे इस वर्ष जनजातीय गौरव मनाने के लिए बिरसा मुंडा और अन्य जनजातीय नायकों के बारे में एक निबंध लिखें और उसे मंत्रालय को भेजें। उन्होंने कहा कि जनजातीय संस्कृति जल, जंगल और जमीन के महत्व को समझती है। उन्होंने पर्यावरण के संरक्षण के लिए सभी ईएमआरएस विद्यार्थियों से अपने स्कूलों, गांवों में पेड़ लगाने और दूसरों को वृक्षारोपण अभियान चलाने के लिए प्रेरित करने का आग्रह किया। श्री अर्जुन मुंडा ने लगभग 1 लाख ईएमआरएस विद्यार्थियों से आजादी का अमृत महोत्सव समारोह के तहत हर घर तिरंगा अभियान में भाग लेने का भी आग्रह किया। इस अवसर पर जनजातीय कार्य एवं जल शक्ति राज्य मंत्री श्री विश्वेश्वर टुडु ने कहा कि शिक्षकों और प्रशासन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विद्यार्थी अच्छे अंक लाने के साथ-साथ अच्छे नागरिक और अच्छे इंसान भी बनें। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति का पालन करते हुए विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति को नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की भी अपील की। जनजातीय कार्य मंत्रालय में सचिव श्री अनिल कुमार झा ने कहा कि शिक्षा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करते हुए उसकी सफलता के द्वार खोलती है। उन्होंने प्रत्येक स्कूल और विद्यार्थी को अपने लक्ष्य निर्धारित करने और उत्कृष्ट प्रदर्शन करने का प्रयास करने का आग्रह किया।

महोबा में पत्थर खनन से हो रहा है वायु और ध्वनि प्रदूषण, एनजीटी ने मांगा जवाब

लखनऊ। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने अपने 8 अगस्त को दिए आदेश में उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और महोबा जिला मजिस्ट्रेटकी संयुक्त समिति को एक तथ्यात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है। मामला महोबा में हो रहे अवैध पत्थर खनन से जुड़ा है।

इस मामले में आवेदक कमलापत का कहना है कि उत्तर प्रदेश राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड प्रदूषण फैलाने वाले खनिकों के खिलाफ कार्रवाई नहीं कर रहा है। वहां नियमों को ताक पर रख दिन-रात ब्लास्टिंग हो रही है, जिससे ध्वनि, वायु प्रदूषण और अन्य वजहों से पर्यावरण को नुकसान हो रहा है। उन्होंने आरोप लगाया है कि इन खानों से निकली धूल खेतों पर जमा हो रही है। साथ ही पहाड़ी रास्ते से खेत की तरफ पत्थर भी गिर रहे हैं। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) में 6 अगस्त, 2022 को सबमिट रिपोर्ट में जानकारी दी है कि सलेम में मैग्नेसाइट और ड्यूनाइट खदानें पर्यावरण नियमों का पालन नहीं कर रही हैं। मामला डालमिया भारत शुगर एंड इंडस्ट्रीज लिमिटेड द्वारा तमिलनाडु के सेलम चेट्टीचवाड़ी गांव में मैग्नेसाइट और ड्यूनाइट की खानों से जुड़ा है। जानकारी मिली है कि इन खानों के पास खनन के लिए वैध पट्टा नहीं है। वहीं तमिलनाडु भूविज्ञान और खनन विभाग का कहना है कि इन खदानों का पट्टा 1976 से 2019 के बीच बिना पर्यावरण मंजूरी के ही चल रहा था। अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों के अनुसार वर्तमान में भी इन खानों के पास वैध पट्टा नहीं है। साथ ही इन खानों के पट्टे को बढ़ाया नहीं जा सकता क्योंकि परियोजना प्रस्तावक आवश्यक शर्तों को पूरा नहीं कर रहा है। गौर अतुल्यम अपार्टमेंट ओनर्स एसोसिएशन ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल एक्ट, 2010 की धारा 14 के तहत एनजीटी में आवेदन दायर किया है। मामला ग्रेटर नोएडा की गौर अतुल्यम सोसाइटी के सामने ग्रीन बेल्ट में होते मोबाइल टावरों के निर्माण से जुड़ा है। आवेदक ने इस मामले में मेसर्स इंडस टॉवर लिमिटेड के पक्ष में ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण (जीएनआईडीए) द्वारा 5 जुलाई, 2022 को जारी आवंटन पत्र को निरस्त करने की मांग की है।

KAR_10_AUG_2022.qxd 10-08-2022 16:00 Page 2

वैश्विक स्तर पर हर साल झीलों से उत्सर्जित हो रही है 4.2 करोड़ टन मीथेन...

नई दिल्ली। क्या आप जानते हैं कि दुनिया भर में झीलें हर साल कितनी मीथेन वातावरण में छोड़ रही हैं, यदि नहीं तो आपकी जानकारी के लिए बता दें कि वैज्ञानिकों का अनुमान है कि हर साल यह झीलें करीब 4.2 करोड़ टन मीथेन वातावरण में उत्सर्जित कर रही हैं। गौरतलब है कि दुनिया भर में करीब 28 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में झीलें हैं जोकि आकार में करीब अर्जेंटीना के बराबर है।

यदि मीथेन की बात करें तो यह एक एक प्रमुख ग्रीनहॉउस गैस है, जो वैश्विक स्तर पर तेजी से बढ़ते तापमान की एक वजह है। यदि पूर्व-औद्योगिक काल की तुलना में देखें तो आज वायुमंडल में मीथेन का स्तर करीब तीन गुना बढ़ गया है। वहीं दूसरी तरफ यदि जलवायु परिवर्तन पर इस गैस के पड़ने वाले असर को देखें तो वो कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में कहीं ज्यादा तेजी से वातावरण को गर्म कर रही है। ग्लोबल वार्मिंग के मामले में यह गैस कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में करीब 28 गुना ज्यादा शक्तिशाली है। अनुमान है कि वैश्विक तापमान में अब तक जितनी भी वृद्धि हुई है उसके करीब 25 फीसदी हिस्से के लिए मीथेन ही जिम्मेवार है। हालांकि हम इंसानों द्वारा उत्सर्जित हो रही मीथेन में बड़ी तेजी से इजाफा हो रहा है, इसके बावजूद प्राकृतिक स्रोतों जैसे आर्द्रभूमियों, नदियों, झीलों और जलाशयों से होने वाले उत्सर्जन को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता।

देखा जाए तो इन जलस्रोतों से निकली मीथेन पानी में फैल सकती है या फिर वो झील के तल पर जमा तलछट से बुलबुला बनकर उत्सर्जित हो सकती है। ऐसे में वैश्विक स्तर पर मीथेन बजट की मात्रा का निर्धारण करने में इसकी गणना एक बड़ी चुनौती है। इसी को ध्यान में रखते हुए जर्नल ऑफ जियोफिजिकल रिसर्च- बायोजियोसाइंसेस में प्रकाशित इस नई रिसर्च में झीलों से उत्सर्जित होने वाली कुल मीथेन की गणना की गई है। इस रिसर्च में मीथेन की गणना करते समय उससे जुड़े कई सम्बंधित कारकों के बारे में नवीनतम आंकड़ों को एकत्र किया था, जिसमें झीलों का क्षेत्रफल, मीथेन उत्सर्जन पर तापमान से सम्बंधित मौसमी बदलावों का प्रभाव शामिल थे। इसी तरह यह झीलें साल में कितने समय तक बर्फ से ढंकी रहती हैं इस बात की गणना भी उपग्रहों की मदद से की है। वहीं अलग-अलग क्षेत्रों में अलग जलवायु और पारिस्थितिकी के बीच इन झीलों से उत्सर्जित होने वाली मीथेन में कितना अंतर है, उसकी भी गणना की गई है। इस अध्ययन में जो निष्कर्ष सामने आए हैं उनके अनुसार यह झीलें हर वर्ष करीब 4.16 करोड़ टन मीथेन उत्सर्जित कर रही हैं। जानकारी मिली है कि इनमें से 1.41 करोड़ टन मीथेन प्रसार के माध्यम से, 2.34

करोड़ टन बुलबुलों के रूप में जबकि 0.41 करोड़ टन बर्फ या पानी के माध्यम से उत्सर्जित हो रही है। जो पिछले अनुमानों की तुलना में कम है। इस बारे में हाल ही में जर्नल नेचर जियोसाइंस में प्रकाशित एक अध्ययन के हवाले से पता चला है कि मीथेन के वैश्विक उत्सर्जन में जलीय पारिस्थितिक तंत्र की हिस्सेदारी करीब 41 से 53 फीसदी के बीच हो सकती है। वहीं जिस तरह से इंसान प्राकृतिक जलीय पारिस्थितिक तंत्र को प्रभावित कर रहा है, उसके चलते मीथेन उत्सर्जन भी बढ़ रहा है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी एक रिपोर्ट से पता चला है कि यदि प्रयास किए जाएं तो इस दशक में मानव उत्सर्जित मीथेन को 45 फीसदी तक कम किया जा सकता है। यह कटौती 2045 तक तापमान में होती वृद्धि को 0.3 डिग्री सेल्सियस तक कम कर सकती है। देखा जाए तो इसकी मदद से पैरिस समझौते के लक्ष्यों को हासिल करने में मदद मिलेगी। अनुमान है कि इस कटौती की मदद से हर साल 2.6 लाख लोगों की जान बचाई जा सकती है। वहीं बढ़ते तापमान की वजह से हर साल 2.5 करोड़ टन फसलों को होने वाले नुकसान को टाला जा सकता है।

बायोफ्यूल पर निर्भरता बढ़ाने और पर्यावरण को सुरक्षित करने के लिए MCL आयोजित कर रहा विशेष सम्मलेन

विले परले पर्यावरण की बढ़ती समस्या और दूषित हो रहे वातावरण को रोकने के लिए हर साल 10 अगस्त को वर्ल्ड बायोफ्यूल डे मनाया जाता है. इसकी स्थापना 1890 में की गई थी. डीजल से चलने वाले इंजन में बढ़त देख यह साफ़ अंदाजा लगाया जा सकता है कि अगर अभी इस पर लगाम ना लगाई जाए, तो आगे चलकर यह मानव जाति के लिए खतरा बन सकता है.

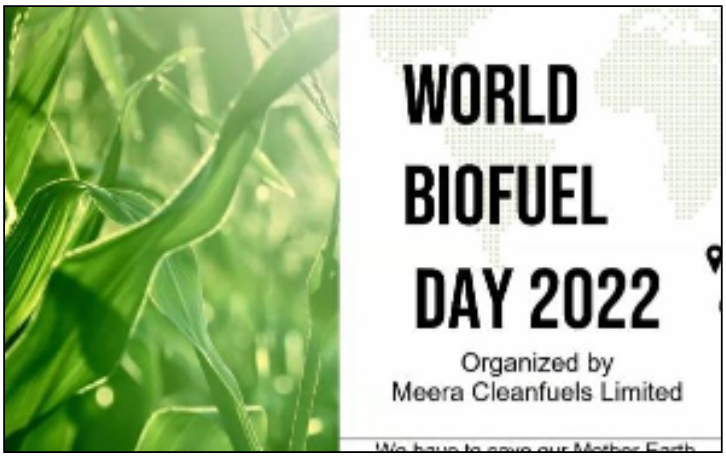

वर्ल्ड बायोफ्यूल डे का मुख्य मकसद इंधन के गैर परंपरा स्त्रोतों के बारे में लोगों को जागरूक करना है. इंधन के गैर परंपरागत स्त्रोत में जीवाश्म ईंधन एक बेहतर विकल्प साबित हो सकता है. इस दिन के अवसर पर केंद्र सरकार द्वारा बायोफ्यूल के क्षेत्र में किए गए विभिन्न कार्यों एवं प्रयासों को सभी के समक्ष दर्शाया जाता है. इसके साथ ही उन तमाम छोटे-बड़े उद्योग को भी उनके इस अथक प्रयास के लिए सराहा जाता है, ताकि वह और मजबूती और निष्ठा के साथ इस दिशा में काम करते रहें. इसी कड़ी में मीरा क्लीन फ्यूल्स, वर्ल्ड बायोफ्यूल डे को और भी ऐतिहासिक बनाने और लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित करने के लिए वर्ल्ड बायोफ्यूल डे के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय जैव ईंधन सम्मेलन आयोजित करने वाला है, जो कि सहारा होटल, विले परले में 10 बजे से आयोजित होने जा रहा है. मीरा क्लीन फ्यूल इस दिशा में 2012 से काम कर रहा है. मीरा क्लीन फ्यूल्स का मुख्य मकसद भारत को ईंधन के मामले में आत्मनिर्भर बनाना है, इसलिए, वह बायोएनेर्जी वर्टिकल में अपने सभी हितधारकों को एक समान व्यापार सृजन मंच प्रदान करने का प्रयास कर रहा है. मीरा क्लीन फ्यूल्स जैव ईंधन के साथ कई अन्य प्रोजेक्ट पर भी काम कर रहा है. मीरा क्लीन फ्यूल्स का मानना है कि जीवाश्म ईंधन के कारण सबसे अधिक प्रदूषण बढ़ा है. ग्लोबल वार्मिंग के लिए भी उन्होंने जीवाश्म ईंधन को ही जिम्मेदार ठहराया है. ऐसे मेंका प्रयास यह है कि जीवाश्म ईंधन) को जैव ईंधन से बदला जा सके. स्ष्टरु के अधिकारीयों ने आकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि हर साल भारत 82त्न प्रतिशत ईंधन दूसरे देशों से आयात करता है, जिसमें भारत का कुल खर्चा लगभग 8 लाख करोड़ का है. ऐसे में हमारा मिशन भारत को ईंधन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना है. इसी सिलसिले में मीरा क्लीन फ्यूल्स 10 अगस्त को ना सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व में यह जागरूकता फैलाना चाहता है कि क्यों हमें वर्ल्ड बायोफ्यूल डे मनाने की जरुरत है?

KAR_10_AUG_2022.qxd 10-08-2022 16:00 Page 3

अर्थ वॉरियर' पंकज, पर्यावरण बचाने के लिए अनोखे तरीके से करते हैं जागरूक

नई दिल्ली। पर्यावरण खतरे में है! बीते सालों में दुनिया में जिस गति से विकास हुआ है. पर्यावरण को क्षति पहुंचने की गति भी उतनी ही ज्यादा तेजी से बढ़ी है. लेकिन प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने के लिए हमने कई तरीकों की खोज की और लगातार कर रहे हैं. ऐसे तरीके जिनसे हमारी सुख सुविधाओं में वृद्धि तो हो, लेकिन प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित करके हम प्रदूषण को कम कर सकें. हालांकि दुनिया में अभी पर्यावरण के प्रति जागरूकता की कमी है. जिसके चलते कई शिक्षित, जागरूक प्रकृति प्रेमी नए-नए तरीकों से लोगों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक कर रहे हैं. कोई पौधरोपण करके, नदी-तालाबों को स्वच्छ बनाकर, तो कोई वायु प्रदूषण को कम करने के लिए प्रयास कर रहा है.

पंकज बताते हैं कि वो बिहार के रहने वाले हैं. पंकज अपने काम के चलते नोएडा रहने आ गए थे. लेकिन उनके मन में दूषित होते पर्यावरण को बचाने के लिए कुछ करने की इच्छा थी. जिसके चलते उन्होंने साल 2018 से लोगों को जागरूक करने के लिए इस तरह से ऑक्सीजन मास्क और पीठ पर पौधा लटकाकर निकलने का फैसला किया. वो एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करते हैं और अपने बचे हुए समय में ऑक्सीजन मास्क और पौधा लटका कर सड़कों पर निकल जाते हैं. उनका कहना है कि उनके इस तरह से निकलने पर लोग उनकी तरफ काफी आकर्षित होते हैं. वो कभी-ट्रैफिक सिग्नल पर तो कभी किसी चौराहे पर खड़े रहकर लोगों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हैं.वो लगातार 4 सालों से ये काम कर रहे हैं. इसके साथ ही पर्यावरण को बचाने के लिए और भी कई सारी गतिविधियां करते हैं. उनके ऐसा करने से लोग उनकी तरफ आकर्षित होते हैं. उनका कहना है कि लगातार बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण हमारे जीवन पर सीधा असर डाल रहा है. जिससे आने वाले समय में हमारा जीना मुश्किल हो जाएगा. इसलिए हमें अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए पर्यावरण को संरक्षित रखने की जरूरत है. पर्यावरण को बचाने के लिए हमें पर्यावरण में होने वाले सभी तरह की प्रदूषण पर खासा ध्यान देने की जरूरत है. उनके इस काम से प्रभावित हुए लोग उन्हें 'ऑक्सीजन मैन' कहकर पुकारते हैं. इसके साथ ही कई लोग उनसे जुड़कर उनके साथ पर्यावरण को संरक्षित करने की इस मुहिम में आगे आए हैं. पंकज अपने काम से समय निकालकर पर्यावरण को बचाने के लिए काम करते रहते हैं.

जिसके चलते उनका साथ देने के लिए कई लोग आगे आए हैं. बीते साल से उनके साथ लगभग 50 से ज्यादा लोग जुड़ चुके हैं. जिसमें कई विद्यार्थी और कई कामकाजी लोग भी हैं जो अपना समय निकालकर छुट्टी के दिन उनके साथ काम करते हैं. वो सोशल मीडिया के माध्यम से भी लोगों को जागरूक करते हैं. इसके साथ ही पूरी टीम के साथ मिलकर उन्होंने अब तक कई गतिविधियां संचालित की हैं. अब भी वो कभी-कभी उनकी 'ऑक्सीजन मैन' वाली पोशाक में लोगों को जागरूक करने के लिए निकल जाते हैं. उनकी टीम के लोग भी पर्यावरण के प्रति स्कूली बच्चों और कॉलेज के विद्यार्थियों को जागरूक करने का काम करते हैं.पंकज और उनकी टीम यमुना की सफाई के लिए 'यमुना क्लीनिंग अभियान' चला रहे हैं. पंकज और उनकी टीम यमुना की सफाई के लिए हफ्ते में रविवार को और बीच में भी समय मिलने पर यमुना नदी की सफाई में लगी हुई है. इसी के साथ वो प्लास्टिक की रोकथाम के लिए भी काम कर रहे हैं. इसमें वो लोगों को प्लास्टिक के उपयोग को कम करने के लिए जागरूक करते हैं. साथ ही लोगों को मुफ्त में कपड़े के थैले दान करते हैं जिससे प्लास्टिक का उपयोग कम हो सके. इसी के साथ नुक्कड़ नाटक जैसे कार्यक्रम भी करते हैं. स्कूल-कॉलेजों में अपनी टीम के साथ जाकर स्टूडेंटस् को जागरूक करने का काम भी करते हैं.टीम 'अर्थ वॉरियर' की नीता से बात करने पर वो बताती हैं कि ÷इस 15 अगस्त को 30 हजार सीड बॉल्स यमुना नदी के आसपास के इलाके में फेंकेंगे. जिससे कि आस-पास के क्षेत्र में पौधे उगने लगें.÷ नीता बताती हैं कि हम स्कूल के बच्चों के साथ पौधरोपण काम भी करते हैं. इसके अलावा असम में बाढ़ प्रभावित लोगों की मदद के लिए भी हमारी टीम ने काम किया है.

छात्र-छात्राओं ने बनाई आकर्षक हर घर तिरंगा आकृति

भोपाल हर घर तिरंगा अभियान में नीमच जिला प्रशासन और हेल्पिंग हैंड्स सोसायटी, नीमच की प्रेरणा और सहयोग से छात्र-छात्राओं ने मानव श्रंखला के रूप में आकर्षक हर घर तिरंगा आकृति बनाई।

उल्लेखनीय है कि नीमच शहर के विभिन्न विद्यालयों के हजारों छात्र-छात्राओं ने कलेक्टर नीमच की उपस्थिति में ÷हर घर तिरंगा÷ अभियान में जन-जागरूकता पर केन्द्रित आकर्षक आकृति बनाकर 13 से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा फहराने का संदेश दिया। यह आकर्षक आकृति नीमच नगर के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक-2 के परिसर में बनाई गई, जिसने सम्पूर्ण जिले में ÷हर घर तिरंगा÷ अभियान का संदेश पहुँचान में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। छात्र-छात्राओं की इस अद्भुत कलाकृति को जिसने भी देखा, उसने मुक्त कंठ से सराहा।

इस रक्षाबंधन संकल्प-सुरक्षित पर्यटन का- प्रमुख सचिव श्री शुक्ला

भोपाल प्रमुख सचिव पर्यटन और संस्कृति एवं प्रबंध संचालक मध्यप्रदेश टूरिम बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने बताया है कि प्रदेश के पर्यटन स्थलों में महिला पर्यटकों के मन में और भी अधिक सुरक्षा और सहजता का भाव विकसित करने इस रक्षाबंधन फ्रसंकल्प-सुरक्षित पर्यटन का अभियान चलाया जायेगा। रक्षाबंधन पर्व पर 10 से 25 अगस्त 2022 तक पर्यटकों के मन में प्रदेश के सांस्कृतिक और सामाजिक पर्वों एवं परंपराओं से अपनेपन और सुरक्षा का भाव पैदा किया जायेगा। इसमें पर्यटक रक्षा संकल्प के साथ स्थानीय महिलाओं और पर्यटकों द्वारा सेवा-प्रदाताओं को रक्षा-सूत्र बंधन, भुजरिया पर्व में भुजरिया देकर सुरक्षा-आश्वासन और होटलों में सावन के झूले लगाने जैसी रचनात्मक गतिविधियाँ होंगी।

पर्यटकों को परियोजना सहयोग संस्था द्वारा भारतीय संस्कृति की विविधता और पर्वों का सही अर्थ बताया जायेगा। जिला पुरातत्व पर्यटन एवं संस्कृति संवर्धन परिषद् द्वारा स्वयंसेवी संस्थाएँ, पर्यटन उद्यम से जुड़े व्यक्ति और संस्थाओं के सहयोग से गतिविधियाँ संचालित होगी। रेडियो और सोशल मीडिया से प्रदेशवासियों को ÷सुरक्षित पर्यटन स्थल÷ को लेकर संकल्प दिलाया जायेगा। सेफ्टी टॉक जैसे कार्यक्रम से सुझाव भी प्राप्त किये जायेंगे। प्रमुख सचिव श्री शुक्ला ने प्रदेशवासियों और पर्यटन उद्यम से जुड़े व्यक्तियों, होटल संचालक, ऑटो-टैक्सी ड्राइवर, टूर-ट्रेवल ऑपरेटर, गाइड, स्थानीय व्यापारियों आदि से अभियान में बढ़-चढ़ कर हिस्सेदारी की अपील की है। उन्होंने कहा कि इससे प्रदेश में पर्यटन को और अधिक सुरक्षित, सहज एवं बेहतर बना कर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकेगा। इसमें सामुदायिक जागरूकता और संवेदनशीलता आवश्यक है। उल्लेखनीय है कि महिला एवं बाल विकास और पर्यटन मंत्रालय के सहयोग से मध्यप्रदेश टूरिम बोर्ड महिलाओं के लिए सुरक्षित पर्यटन योजना÷ प्रदेश के 50 पर्यटन स्थलों पर संचालित कर रहा है। इसका उद्देश्य प्रदेश के पर्यटन स्थलों पर महिला पर्यटकों में सुरक्षा और सहजता का भाव जागृत करना है, जिससे वे पर्यटन के दौरान आनंद की अनुभूति कर सकें।

KAR_10_AUG_2022.qxd 10-08-2022 16:00 Page 4

आजादी का महत्व

आजादी की तारीखें आर्धशताब्दी पूरी कर आगे बढ़ चुकी हैं, आजादी के दीवानों की कहानियां कितनों की जबानी और कितनों की जिन्दगानी बन चुकी हैं। आजादी के इन वीर योद्धाओं में दीवानों की तरह मंजिल पा लेने का हौसला तो था, लेकिन बर्बादियों का खौफ न था। रोटियां भी मयस्सर न हों लेकिन परवाह न था, दीवानों की तरह ये आजादी के दीवाने भी, मंजिलों की तरफ बढ़ते चले गये, बड़े से बड़े जुल्मों सितम भी उनके कदमों को न रोक सके, कोई ऐसी बाधा न हुई, जिसने उनके सामने घुटने न टेक दिए। अपने हौसलों से हर मुश्किल का सीना चिरते हुए आजादी की मंजिल की तरफ बढ़ते ही चले गये। न हिसाब है, न कीमत है उनकी कुर्बानियों का, सँभाल कर रख सकें उनके जिगर के टुकड़े आजादी को सही सलामत, यही कीमत हो सकती है उनकी मेहरबानियों का। हम आजाद हुए, कितना कुछ बदल गया, खुली हवा में साँस तो ले सकते हैं, दो वक्त की रोटियां तो मिल जाती हैं, बेगार के एवज में किसी के लात घुंसे तो नहीं खाने पड़ते हैं, बहुत कुछ बदल गया। कम से कम अपने मौलिक अधिकारों के अधिकारी तो हैं, मुँह से एक शब्द लिकालना गुनाह तो नहीं है। अच्छा है हम आजाद हैं, और भी आच्छा होगा यदि हम आजाद रहें, उससे भी अच्छा होगा यदि हम दूसरों को आजाद कर सकें, गरीबी, भ्रष्टाचार, अज्ञानता और अंधविश्वास की गुलामी से। इंसानों के बंधनों से आजाद हो गये, मन के कुसंस्कारों के बन्धन से आजाद हों तो पूरा आजादी मिलेगी। दूसरों से लड़कर उनके बन्धन से तो आजाद हो गये, स्वयं के अन्दर व्याप्त कुसंस्कारों से लड़कर कितने लोग आजाद हो पाते हैं यह तो वक्त ही जानता है। आजादी एक दिन में नहीं मिली, शताब्दियां लग गयीं, इन बातों को भी समझने में वक्त लगेगा। एक विद्यार्थी को किसी संस्था के माध्यम से स्नातक होने में कम से कम पन्द्रह वर्ष तो लग ही जाते हैं, तो एक स्वनुभव से ज्ञान प्राप्त करने वाले व्यक्ति को भी कम से कम पन्द्रह वर्ष लग ही जायेंगे, कुछ ज्यादा भी लग जाये तो भी हैरानी की बात नहीं, और उम्र भी बीत जाए फिर भी ज्ञान प्राप्त न हो तो भी कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि ज्यादातर यही होता है आपवाद स्वरुप में पन्द्रह वर्ष से पूर्व ही ज्ञान प्राप्त हो जाये तो भी कोई आश्चर्य नहीं। जब भी हो जैसे भी हो जब तक प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित नहीं हो जाता किसी समग्र बदलाव की उम्मीद व्यर्थ है।

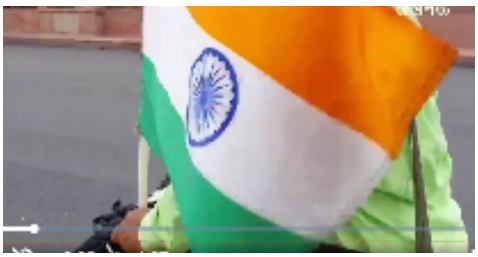

पर्यावरण बचाने की जिद ने कृष्णानंद राय को दी नेचर मैन की पहचान, सीएम योगी कर चुके हैं सम्मानित

लखनऊ. हाथों में तिरंगा, साइकिल पर नीम का पेड़, एक बड़ा सा झोलाज्पर्यावरण को बचाने के लिए लिखे गए संदेशों के बैनर से भरी हुई एक साइकिल के साथ 61 वर्षीय कृष्णानंद राय रोजाना लखनऊ शहर में 50 किलोमीटर का सफर तय करते हैं. इन्हें लखनऊ के लोग 'नेचर मैन' के नाम से जानते हैं. वहीं, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वर्ष 2018 में इनको गंगा सेवक सम्मान से सम्मानित किया था. उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से सीनियर अकाउंटेंट के पद से सेवानिवृत्त हुए कृष्णानंद राय लोगों को पर्यावरण और सेहत के प्रति जागरूक कर रहे हैं. साथ ही लोगों को हेलमेट और सीट बेल्ट लगाने का भी संदेश देते हैं. कृष्णानंद राय बताते हैं कि उनके नाना, बाबा, माता पिता और चाचा सभी पर्यावरण को साफ और सुरक्षित रखने के लिए समर्पित थे. इसी का असर उन पर भी हुआ. वे कहते हैं कि हवा पानी जब स्वछ रहेगा तब जीवन चल पाएगा, पेड़ लगाकर देखो भैया अछा दिन आ जाएगा. उन्होंने बताया कि आज न हवा स्वछ मिल पा रही है न पानी, सड़कों पर भारी जाम लगा रहता है. अगर लोग पौधे लगाएं और पुराने पौधों को बचाएं, नदियों को साफ रखें और अपनी सेहत को अछा रखने के लिए पास के सफर को साइकिल से ही तय करें तो इससे न सिर्फ पर्यावरण को फायदा होगा बल्कि लोगों को अछी सेहत भी मिलेगी. अकेले जाने के लिए लोगों को चार पहिया का इस्तेमाल न करके साइकिल का इस्तेमाल करना चाहिए. इससे पर्यावरण में प्रदूषण कम होगा. साथ ही साथ ट्रैफिक जाम से भी निजात मिलेगा और लोगों को बीमारियों से भी मुक्ति मिलेगी. 7 अप्रैल 2018 को प्रयागराज में गंगा सेवक सम्मान से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सम्मानित किया था. वहीं, विश्व मानव संघ की ओर से अंतर्राष्ट्रीय जुनून अवार्ड से 2018 में सम्मानित हुए थे. कृष्णानंद चिरइयो ना बोले जैसी फीचर फिल्म में बाबा जी की भूमिका भी अभिनेता के तौर पर अदा कर चुके हैं.वर्तमान में भोजपुरी कवि भी हैं.

देहरादून में चल रहा हर पेड़ तिरंगा अभियान, पर्यावरण प्रेमियों को क्यों शुरू करनी पड़ी ऐसी मुहिम?

देहरादून. उत्तराखंड की राजधानी देहरादून के सहस्त्रधारा रोड के चौड़ीकरण के लिए हजारों पेड़ काटे जा रहे हैं. पर्यावरण प्रेमी लगातार इसका विरोध कर रहे हैं. आजादी के अमृत महोत्सव के तहत देश में 'हर घर तिरंगा' अभियान चलाया जा रहा है. इसी की तर्ज पर पेड़ों को बचाने के लिए पर्यावरण प्रेमी 'हर पेड़ तिरंगा' अभियान चला रहे हैं. रोड चौड़ीकरण के लिए जिन पेड़ों को काटा जाना है, उन्हें बचाने के लिए पर्यावरण के लिए काम करने वाली ट्रस्ट संस्था के वॉलंटियर्स इस अभियान के तहत पेड़ों को तिरंगे के रंग में रंग रहे हैं.

MAD संस्था के वॉलंटियर पार्थ पंत का कहना है कि हम इस अभियान को इसलिए चला रहे हैं कि हम आजादी का महोत्सव पेड़ों के साथ मना रहे हैं, क्योंकि पेड़ भी पक्षियों का घर होते हैं. उन्होंने कहा कि हम उन्हें क्यों भूल जाते हैं. ये पेड़-पौधे, पक्षी हमारे जीवन का आधार हैं. आपको बता दें कि सहस्त्रधारा रोड चौड़ीकरण के लिए करीब 2057 पेड़ काटे जाने के आदेश दिए गए थे, जिनमें 1006 यूकेलिप्टस के पेड़ शामिल हैं. इसके खिलाफ आशीष गर्ग ने जनहित याचिका दाखिल की थी, जिस पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने 11 मई 2022 को पेड़ों के कटान पर स्टे लगा दिया था, जिसे 22 जून को हटा दिया गया. 1 जुलाई से फिर पेड़ काटे जाने लगे. अभी तक सैकड़ों पेड़ काटे जा चुके हैं. याचिकाकर्ता आशीष गर्ग और पर्यावरण प्रेमियों ने मिलकर सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया. सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट को आदेश दिया कि याचिकाकर्ताओं के सुझाव को सुने और ट्रांसप्लांट को सही तरीके से करें. अदालत की तरफ से फिलहाल पेड़ों के कटान पर रोक लगा दी गई है. इस मामले में अब 17 अगस्त को अगली सुनवाई होनी है. याचिकाकर्ता आशीष गर्ग ने बताया कि लगातार हम इन पेड़ों को बचाने के लिए प्रयास कर रहे हैं और कई तरह के सुझाव दिए हैं, जो पर्यावरण और विकास में कारगर साबित हो सकते हैं.

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008